सूर्य देव जी की आरती

जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय अदिति-नन्दन ।
त्रिभुवन-तिमिन निकन्दन भक्त-हृदय-चन्दन ।। टेक ।।
सप्त - अश्वरथ राजित एक चक्रधारी ।
दुखहारी - सुखकारी, मानस-मल-हारी ।। जय ।।
सुर-मुनि-भूसुर-वंदित, विमल विभवशाली ।
अघ-दल-दलन दिवाकर दिव्य किरण माली ।। जय ।।
सकल-सुकर्म-प्रसविता सविता शुभकारी ।
विश्व-विलोचन मोचन भव बंधन भारी ।। जय ।।
कमल-समूह-विकासक, नाशक त्रय तापा ।
सेवत सहज हरत अति मनसिज-संतापा ।। जय ।।
नेत्र-व्याधि-हर सुरवर भू-पीड़ा-हारी ।
वृष्टि-विमोचन संतत परहित - व्रतधारी ।। जय ।।
सूर्यदेव करूणाकर अब करूणा कीजै ।
हर अज्ञान - मोह सब तत्त्वज्ञान दीजै ।। जय ।।